इस मायावी संसार में आप कई रूप बदलते हैं और बहुत-सी पहचानों के साथ जीते हैं, और हर पहचान के लिए आपको एक खास भूमिका निभानी होती है। अगर हम इसे अपने अस्तित्व का आधार मानें, तो हमें सिर्फ शारीरिक और सामाजिक स्तर पर ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक स्तर पर भी जुड़ना होता है।

आध्यात्मिक गठबंधन

गुरुदेव का नाता कई शक्तिशाली देवी-देवताओं और संतों से रहा, जैसे गुरु नानक देव, गुरु गोबिंद सिंह, कुछ मुस्लिम संत, भगवान कृष्ण, गुरु वशिष्ठ, शिव के अलग-अलग स्वरूप और कई अन्य परम आत्माएं।

उनके शिष्यों की मदद के लिए महान दत्तात्रेय, शिर्डी के साईं बाबा, अमर परशुराम जी, बुड्ढे बाबा और औघड़ जैसे अवतारों ने दर्शन दिए। महाकाली, देवी रेणुका, लक्ष्मी, सरस्वती, अश्विन कुमार, गणपति, हनुमान और अन्य परम अवतारों ने गुरुदेव को उनके मिशन में सहयोग दिया। इसीलिए हमने इस पॉडकास्ट का शीर्षक रखा है - आध्यात्मिक गठबंधन।

गठबंधन का मतलब यही होता है, जहां आप एक ही मकसद के लिए साथ कदम बढ़ाते हैं। गठबंधन उनमें होता है, जिनके विचार एक जैसे होते हैं या उनमें थोड़ा-बहुत फर्क होता है, लेकिन वे सभी अध्यात्म की एक ही राह के हमसफ़र होते हैं।

गुरुदेव जिस तरह की आध्यात्मिक महाशक्ति थे, उससे उनके लिए किसी भी दूसरी आध्यात्मिक महाशक्ति के साथ नाता जोड़ना बड़ा स्वाभाविक था। क्योंकि वो मानवीय रूप में थे, इसलिए उन्हें तो अलग-अलग समय पर अलग-अलग भूमिकाएं निभानी थीं। जब वे गुरु के रूप में होते थे, तो उनका एक अलग तरह का आचरण होता था। जब वे शिव रूप में होते थे, तो एक अलग अवतार में प्रकट होते थे और जब पड़ोस के लड़के की भूमिका निभाते, तो उनका किरदार और व्यक्तित्व पूरी तरह बदल जाता था।

कॉमिक सीरीज़ के सुपर हीरो सुपरमैन को ही ले लीजिए। उसकी असीम क्षमताएं आप आसानी से मान लेते हैं, क्योंकि वो एक काल्पनिक किरदार है। लेकिन जब ऋषि, इस भूलोक से कहीं ऊंचे अपने अलौकिक दायरे से नीचे उतरकर पृथ्वी पर जन्म लेते हैं, तो हर चमत्कार में तर्क तलाशने वाला हमार दिमाग उनकी क्षमताओं को भी काल्पनिक मान बैठता है। हो सकता है हम भी उसी उच्च लोक से हों, लेकिन चूंकि हमें अपना अतीत याद नहीं रहता, तो हम सिर्फ उसी बात पर यकीन रख पाते हैं, जिसे हमारी इंद्रियां देख या महसूस कर पाती हैं। जरूरी नहीं कि देवी-देवता उच्च लोक से ही हों, और इसलिए वो भी अपने वरिष्ठों का आदर करते हैं और उनके साथ गठबंधन बनाते हैं।

अगर आपने कभी इसका अनुभव नहीं किया हो, तो सुनने में यह आपको भी परी लोक की कहानी लग सकती है। लेकिन हम आपका मानसिक दायरा बढ़ाने का प्रयास करेंगे। तो आप सभी इस बात को स्वीकार कीजिए कि आपकी आशंका की चारदीवारी के बाहर भी कुछ चीजों का अस्तित्व होता है।

गिरी लालवानी आपको ऐसी ही एक अविश्वसनीय यात्रा पर ले जा रहे हैं,

गिरी जी : उन्होंने मुझे बताया था कि वे क्या हैं। उन्होंने कहा, "मैं सर्वशक्तिमान हूं। मेरे अंदर सभी शक्तियां मौजूद हैं। बेटा, मैं कैसे काम करता हूं? यह प्रधानमंत्री के अधीन काम करने वाले मंत्रालय की तरह होता है। वो वित्त मंत्री को आर्थिक मदद करने का आदेश देते हैं। अगर हमारे देश में कोई समस्या आती है तो रक्षा मंत्री से कहते हैं कि वहां अपनी मिलिट्री भेजें। यह सारे विभाग प्रधानमंत्री के अधीन होते हैं। तो सारे डिपार्टमेंट्स मेरे अंडर हैं।" फिर उन्होंने कहा, "जैसे तुम्हें या तुम्हारी बहन को बेटा चाहिए था तो मैंने ब्रह्मा जी से कहा कि तुमको बेटा दे दे। किसी को नौकरी चाहिए या किसी का बिजनेस अच्छा नहीं चल रहा है तो मैं विष्णु जी से कहता हूं कि उसकी मदद कर दें। या मैं लक्ष्मी जी से उसे धन-संपत्ति देने को कहता हूं। यदि किसी की जिंदगी 5, 10 या 15 साल बढ़ानी है, जैसे तुम्हारी सास की बढ़ाई थी, तो मैंने शिव जी से कहा था कि उनकी जिंदगी 10 साल बढ़ा दें, जो शिव जी का विभाग है। पहले 5 साल के लिए, फिर और 5 साल के लिए। यह सारे विभाग मेरे अंडर आते हैं। तो जब उम्र बढ़ा दी जाती है तो जिंदगी की परवरिश भी करनी पड़ती है। तो रोटी, कपड़ा और मकान के लिए मैं विष्णु जी से कहता हूं। रक्षा मंत्रालय के लिए चामुंडा देवी हैं। यदि कोई शारीरिक तकलीफ में है, तो मैं उन्हें मदद के लिए कहता हूं। मैं चामुंडा देवी या महाकाली देवी से कहता हूं कि उनकी मदद

करें। सभी देवी-देवता मेरे अंडर में हैं।" मुझे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्होंने कहा कि सभी देवी-देवता उनके अंडर में हैं।

पूरण जी ने गुड़गांव में गुरुदेव के घर पर सेवा की थी। ज़ाहिर है, उन पर भी स्थान का अलौकिक प्रभाव था। उन्होंने कई मौकों पर देवी-देवताओं के साक्षात दर्शन किए।

पूरण जी : गुरु की मदद और आशीर्वाद के बिना कुछ नहीं होता था। उन्होंने मुझे भगवान बुद्ध के दर्शन कराए।

(वाह)

पूरण जी : ईसा मसीह, भगवान शिव और यहां तक श्री रामकृष्ण परमहंस जी की पत्नी शारदा देवी के भी।

सवाल : भगवान शिव को देखने का अपना अनुभव बता सकते हैं?

पूरण जी : मैं जाकर उनकी गोद में बैठ गया।

सवाल : कितने बड़े थे? क्या वो आकार में बहुत बड़े थे?

पूरण जी : नहीं, मेरे और आपके जैसे। उनकी ऊंचाई 5'10 या 5'9 या 5'11 रही होगी। 24-25 साल के जवान व्यक्ति की तरह थे।

सवाल : क्या उनकी आंखें लाल थी?

पूरण जी : बड़ा चमकदार चेहरा था, बहुत ही सुंदर।

सवाल : क्या शरीर का रंग नीला था?

पूरण जी : हमारी त्वचा से थोड़ा हल्का रंग।

सवाल : और क्या आपने उनके गले में नाग, जटा में गंगा और वो सारा अवतार देखा था?

पूरण जी : जैसे होते हैं, वैसे तो नजर आए।

सवाल : और उन्होंने आपको आशीर्वाद दिया था?

पूरण जी : मैं उनकी गोद में बैठा था।

सवाल : और क्या आपने उनसे बातचीत भी की?

पूरण जी : उन्होंने बस मेरे सिर पर हाथ रखा और दुलार किया।

सवाल : और जीसस?

पूरण जी : हमने थोड़ी देर बात की, लेकिन हम उनकी भाषा नहीं समझ पाए। उन्होंने हिंदी में बात करने की कोशिश की और कहा, "तुम्हारे गुरु महान हैं।"

सवाल : क्या उनके लंबे बाल थे?

पूरण जी : वो अपनी तस्वीरों की तरह ही नजर आए। 15-20 प्रतिशत का फर्क होगा। लेकिन उनकी त्वचा बहुत दमक रही थी। उनका जो आध्यात्मिक आभामंडल था, वो बहुत ही प्रभावशाली था

यहां चर्चा इस बात पर हो रही है कि इस पृथ्वी पर गुरुदेव का नाता किन-किन देवी-देवताओं के साथ था। हालांकि उनकी बातें हमें सुनने में थोड़ी अभिमानी लग सकती हैं।

भले ही उनके शब्द हमें किसी आम इंसान के ऊंचे दावे मालूम हों, लेकिन जब इन शब्दों को एक ऐसे शख्स कहें, जो स्वयं अपनी पहचान और अहंकार से आगे निकलकर चेतना के सर्वोच्च

स्तर पर पहुंच गए हों, तब शायद हमें ऐसा ना लगे। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो कोई ऐसे शख्स, जिन्होंने अपने भीतर शिव तत्व महसूस कर लिया हो।

प्रदीप सेठी, जिन्हें सनी के नाम से भी जाना जाता है, पूरी शिद्दत के साथ ये मानते हैं कि परम शक्तिमान दत्तात्रेय भगवान ने उन्हें एक शिव मंदिर बनाने के लिए लोनावला के पास जमीन दिलाने में मदद की थी।

सवाल : मैं श्री प्रदीप जी से बात कर रहा हूं, जो गुरुदेव के परम शिष्यों में से एक हैं। प्रदीप जी, आपसे मेरा सवाल है कि मैं आपके द्वारा बनाए मंदिर में आपके साथ गया हूं और मैं आपके बिना भी वहां गया हूं। मैं जानना चाहता हूं कि यह मंदिर कैसे बना?

प्रदीप जी : असल में मेरे मन में शिव मंदिर बनाने का कोई विचार नहीं था। मैं अपने परिवार के साथ मुंबई से दिल्ली आया था और मैं वहां कुछ सालों तक रहा। तो एक दिन ध्यान करते हुए मुझे दत्तात्रेय जी के दर्शन हुए। एक बड़ा सुंदर पेड़ था और वो उस पेड़ के सामने खड़े थे। उनके आसपास बड़ी चमकदार रोशनी थी। उनका कुत्ता और गाय भी वहां थे, दोनों सफेद रंग के थे। बस इतना ही। जब मैं जागा तो मुझे लगा कि हम आध्यात्मिक यात्रा पर हैं, तो हमें हमेशा देवी-देवताओं के दर्शन तो होते रहेंगे, है ना?

सवाल : जी

प्रदीप जी : और बाकी लोग, जिनकी अपनी यात्रा है, वो भी इसी तरह देवी-देवताओं से मिलते हैं। तो ये बात खत्म हो गई थी। दिल्ली में रहने के दौरान मेरा वापस आने का कोई इरादा नहीं था। लेकिन कुछ सालों में हम वापस आ गए। तो जब हम वापस लौटे, तो मेरे मन में मंदिर बनाने का विचार आया। तब हम जमीन की तलाश में कई जगहों पर गए और हमें यह जगह मिली। मैं वहां गया तो मैंने वहां पहाड़ी पर एक छोटा-सा शिवलिंग देखा, जो पहले से ही वहां था, लेकिन उसका ध्यान रखने वाला कोई नहीं था। मैं वहां बैठा और मुझे इसका जवाब मिल गया कि यही वो जगह है। तो हमने ब्रोकर को कॉल किया और हम सौदे पर सहमत हो गए और इसकी कीमत भी तय हो गई थी। 10 दिन बाद उसने मुझे कॉल करके कहा, "मैं यह जमीन नहीं बेचना चाहता। मैंने अपना इरादा बदल दिया है।" मैंने कहा, "ठीक है, कोई दिक्कत नहीं।"

फिर कुछ समय बाद एक गुरुवार को मैं मुंबई में सेवा कर रहा था। तो शुक्रवार की सुबह मुझे कॉल आया। जिसने मुझे कॉल किया, वो दिल्ली से थीं। वो कपूर परिवार से थीं और उनका नाम मिसेज़ कपूर था। उन्होंने मुझे कॉल करके कहा, "अरे आज सुबह मैंने सपना देखा कि आपने एक पहाड़ी पर एक मंदिर बनवाया है और मैं वहां हूं और मेरे साथ बहुत-से लोग वहां हैं और आप सभी को जलेबियां परोस रहे हैं।" तो जिस पल उन्होंने फोन रखा, उसके 10 मिनट बाद मुझे उसी ब्रोकर का फोन आया, जिसने मुझसे कहा कि हमने यह जमीन बेचने का फैसला कर लिया है और इस तरह से चीजें आगे बढ़ीं।

फिर मैंने कॉन्ट्रैक्टर से चर्चा की और उसने जमीन देखी। मैंने उससे कहा कि हमें यहां मंदिर बनाना है। सबकुछ देखने के बाद उस कॉन्ट्रैक्टर ने मुझसे कहा, "अरे यह जमीन तो बहुत अच्छी है।" मैंने पूछा, "क्यों।" उसने कहा, "देखिए वो औदुम्बर (गूलर) का पेड़ है, जो दत्तात्रेय भगवान का माना जाता है।" जब मैंने देखा तो मैंने महसूस किया कि यह तो वही पेड़ है, जो मैंने कुछ साल पहले उस सपने में देखा था।

अपनी जवानी के दिनों में मुझे भी जलेबियों का बेहद शौक रहा है। ऐसे में, मुझे लगता है कि जलेबी लेडी स्वाति कपूर से बात करना लाज़मी होगा, जो इस मंदिर के निर्माण से कुछ साल पहले ही इसे अपने सपने में देख चुकी थीं।

सवाल : स्वाति जी मैं आपसे उस ख्वाब के बारे में जानना चाहता हूं, जो आपने कई साल पहले उस मंदिर के बारे में देखा था, जो आगे चलकर लोनावला में बना। हमें उस बारे में बताइए।

स्वाति जी : मैं भाग्यशाली थी कि आदरणीय गुरु जी मेरे सपने में आए और मुझे वो जगह दिखाई। गुरुदेव ने कहा, "यह आपका नया स्थान होगा।" यह स्थान मंदिर जैसा नहीं था। यह एक छत थी, जो बहुत टपक रही थी। और तब मैंने वहां सनी गुरुजी को कुछ जलेबियां तलते हुए देखा। बस इतना ही। इसके एक हफ्ते बाद मैंने पुंचू मां को अपना सपना बताया। 2 साल बाद मेरा सपना एक बड़े स्थान के रूप में साकार हुआ।

गुरुदेव की ज़िंदगी का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था हिमाचल प्रदेश के रेणुका में उनका कैंप। इसी पड़ाव पर परशुराम जी के साथ उनका आध्यात्मिक गठबंधन बना। रेणुका के पास बायरी नामक

स्थान पर मंदिर बनाना एक बड़ी कवायद थी, जिसमें बड़े ऊंचे स्तर की कूटनीति, राजनीतिक सूझबूझ और गठबंधन सामने आया।

रवि त्रेहन जी इसे समझाते हैं,

रवि त्रेहान : ये एक लंबी कहानी है, जितना कि मैं जानता हूं और जो मुझसे शेयर किया गया है या जो मैंने सुना है। रेणुका परशुराम जी की माताजी थीं और उस इलाके में परशुराम जी का ही पूरा वर्चस्व था। इसलिए उस जगह पर कोई भी दूसरी आध्यात्मिक शक्ति प्रवेश नहीं कर सकती। तो जब गुरुदेव पहली बार वहां आए तो परशुराम जी से उनका आमना-सामना हुआ। जब गुरुदेव उनसे पहली बार मिले थे, तब परशुराम जी अपने 27 फुट ऊंचे अवतार में थे । गुरुदेव से चर्चा करने और उनकी आध्यात्मिक शक्तियों का आकलन करने के बाद जब परशुराम जी गुरुदेव से दूसरी बार मिले तब वो 18 फुट ऊंचे थे। तीसरी बार जब परशुराम जी मिले, तो वो अपने सामान्य रूप में यानी 9 फुट ऊंचे थे। परशुराम जी ने गुरुदेव को उस स्थान पर रहने दिया, जिस पर उनका आध्यात्मिक नियंत्रण था। गुरुदेव के किसी भी शिष्य को तब तक वहां जाने की इजाजत नहीं मिली, जब तक कि परशुराम जी और गुरुदेव के बीच अच्छा रिश्ता नहीं बन गया।

यह तो बड़ा मुश्किल रिश्ता था। परशुराम जी, शिव की शक्ति के स्वरूप माने जाते हैं। वो अपनी शक्तियों और अपनी अमरता से भलीभांति वाकिफ थे। उनसे गठबंधन करने के लिए उनका दिल जीतना बड़ा कठिन काम रहा होगा। जो स्थान 1980 में गुरुदेव और परशुराम जी ने मिलकर शुरू किया था, उस स्थान पर पिछले कुछ दशकों में कई लोगों की मदद की गई और वहां बहुतों का उपचार हुआ। माना जाता है कि परशुराम जी अब भी इस स्थान की देखरेख करते हैं और निस्वार्थ सेवा के अपने संयुक्त अभियान में मदद करते हैं।

आइए आपको एक निजी किस्सा सुनाता हूं तो दिलचस्प होने के साथ-साथ मेरे लिए थोड़ा शर्मिंदगी भरा भी है। गुरुदेव ने मुझे, सुभाष सभरवाल और एक अन्य व्यक्ति को रेणुका के स्थान पर दर्शन करने भेजा था। मैं परशुराम जी के साथ हमारे गठबंधन से वाकिफ था, लेकिन इसके बावजूद मैं गैर-जिम्मेदारी से पेश आया। परशुराम जी ने मुझे इसकी सजा भी दी। हालांकि जब मैंने परशुराम जी की माता देवी रेणुका से मदद की गुहार लगाई, तो उन्होंने मेरी रक्षा की।

वो मेरी बेवकूफी और नादानी थी। शायद गुरुदेव के साथ परशुराम जी के गठबंधन की वजह से ही परशुराम जी ने खुद पर नियंत्रण रखा और मेरा सर्वनाश करने के बजाय मुझे सिर्फ एक आध्यात्मिक सजा देकर बख्श दिया। जब मैं कैंप में वापस आया, तो गुरुदेव ने भी उस घटना का जिक्र किया और वो मेरे कारनामे से खासे खफा भी थे।

वैसे, उस मौके पर मेरे हालात बयां करने के लिए ये शेर काफी होगा,

अपने रब के फैसले पर भला शक कैसे करूं,
अपने रब के फैसले पर भला शक कैसे करूं,
सजा दे रहा है अगर वो कुछ तो गुनाह रहा होगा

दूसरी ओर, प्रदीप सेठी इस महान देव के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे और इसलिए परशुराम जी ने उन्हें अपने दर्शनों से नवाजा।

प्रदीप जी : मुझे लगता है कि उस वक्त सुबह के 3 या 4 बजे होंगे। अभी जब मैं यह किस्सा सुना रहा हूं तो मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं। मैंने एक नदी या झील देखी, जिसकी गहराई साफ नजर आ रही थी। उसका पानी इतना साफ था कि आप उसके अंदर पड़े पत्थर और मछलियां भी देख सकते थे। और उस झील के बीच में से पानी में से दो पैर प्रकट हुए जिस पर खड़ाऊ थे। मैंने धीरे-धीरे उन नंगे पैरों से ऊपर घुटनों की तरफ देखा तो एक आदमी हाथ जोड़े खड़े थे, जो ऊपर देख रहे थे और फिर मेरी नजरें उनके चेहरे पर जाकर टिक गईं और मैंने उनकी आंखें देखीं, जो बहुत लाल थीं। यह एक अद्भुत दृश्य था। वो 7.5-8 फीट ऊंचे थे। हमारा परशुराम जी के साथ नाता है, क्योंकि वो सीधे भगवान शिव के शिष्य हैं। तो पहली बार मैंने यही दृश्य देखा था।

बिंदु लालवानी एक बड़ा दिलचस्प वाकया बताती हैं, जब गुरुदेव के कहने पर देवी रेणुका ने उन्हें एक बेटे का वरदान दिया था। आइए, रुख करते हैं उस कहानी की तरफ,

सवाल : तो मेरी बात बिंदु लालवानी से हो रही है। वो गुरुदेव और उनकी पत्नी माताजी के लिए एक नन्हीं बच्ची की तरह रही हैं। बिंदु आप हमें रेणुका के बारे में एक कहानी बता रही थीं, जो

मुझे लगता है कि बड़ी दिलचस्प है। तो हमें बताइए कि यह सब कैसे शुरू हुआ था और क्या हुआ था?

बिंदु जी : उस वक्त मैं अपने पहले बच्चे को लेकर गर्भावस्था के बीच में थी। गुरुजी मुझे रेणुका जी के पास ले गए और उन्होंने मुझसे झील की परिक्रमा करवाई। और मेरी परिक्रमा के बीच में ही उन्होंने मुझे एक जगह दिखाई, जहां से थोड़ा पानी निकल रहा था। वो एक छोटा-सा झरना था, जो पहाड़ी में कहीं से निकला हुआ था। तो गुरुजी ने कहा, "बेटा, यह रेणुका मां का जल है, इसे पी लो और उनसे कहो कि मुझे बेटा दो।" तो मैंने वैसा ही किया। मुझे यकीन था कि मुझे बेटा होगा। कुछ महीनों बाद जब मैंने एक लड़के के हिसाब से सारी तैयारी कर ली थी, तब मुझे याद है मेरे पति की दादी ने मुझसे कहा था, "बेटा, जब गुरुजी ने कहा है तो इतना ही बहुत है। तो यदि लड़की भी हुई तो भी उसी तरह उसका स्वागत करना, जिस तरह तुम लड़के का करने वाली हो।" और मैंने उन्हें विश्वास के साथ कहा, "नहीं दादी, गुरुजी ने कहा है कि बेटा मांगो और उन्होंने मुझे बेटा दे दिया हुआ है।" मुझे बेटा हुआ और इस तरह राहुल का जन्म हुआ।

यहां एक बुनियादी बात जानना जरूरी है। वो यह है कि बेटा या बेटी जो भी हो, उसी के अनुसार गर्भावस्था के तीसरे या चौथे महीने में एक आत्मा गर्भ में प्रवेश करती है। तो ऐसे में बिंदु को बिल्कुल सही समय पर आशीर्वाद मिला था।

किसी शायर ने भी क्या खूब कहा है...

मेरे रब की रहमत का भी अंदाज़ है निराला
मेरे रब की रहमत का भी अंदाज़ है निराला
सबकुछ देकर भी कहता है, कोई है मांगने वाला

रेणुका में गुरुदेव के पहले शिष्य थे चंद्रमणि वशिष्ठ। वो परशुराम जी के भक्त थे, और रेणुका मंदिर के सुधार कार्यों और अतिरिक्त निर्माण की जिम्मेदारी उन पर थी। इस तरह वो वहां स्थान का संचालन करने वाले एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गए।

उनके शिष्य दिनेश जी इस समय यह स्थान चलाते हैं। दिनेश जी और उनकी पत्नी पूरे विश्वास के साथ यह मानते हैं कि इस स्थान की देखरेख के लिए परशुराम जी अक्सर यहां वेश बदलकर आते हैं। जब इस स्थान का सुधार कार्य चल रहा था, तब एक चीता आकर वहां से कुछ मीटर की दूरी पर ठहरा हुआ था। उसने न तो किसी को नुकसान पहुंचाया और ना ही किसी को डराया। जैसे ही मंदिर का काम खत्म हुआ, वो चीता भी चला गया। क्या आपने कभी ऐसे सिविल इंजीनियर के बारे में सुना है, जो असल में एक चीता है!

हालांकि गुरुदेव की दिव्यता की झलक तो उनके बचपन से ही मिलने लगी थी, लेकिन आईने ने कभी उन्हें उनकी दिव्यता की असली परछाई नहीं दिखाई। उन्हें यह एहसास तो वक्त के साथ अलग-अलग पड़ाव पर होता रहा। इस एहसास की एक बेहद खास कड़ी थे बुड्ढे बाबा, जिन्होंने उनके साथ गठबंधन बनाया। बुड्ढे बाबा ने गुरुदेव को वो सारी सिद्धियां त्यागने के लिए विवश कर दिया था, जो उन्होंने दसुआ के सीताराम जी के मार्गदर्शन में प्राप्त की थी। बुड्ढे बाबा के साथ गठबंधन के बाद ही गुरुदेव का महागुरु रूप जागृत हुआ।

गुरुदेव की आध्यात्मिक शुरुआत बड़ी सादगीपूर्ण थी। वो देखने में तो बस एक आम तलबगार नजर आते थे। वो आध्यात्मिक हमलों से भी अछूते नहीं थे और इसके शिकार भी हुए।

गुरुदेव जब पांचवी या छठवीं कक्षा में थे, तब किसी ने उन पर काला जादू कर दिया था और वो लंबे समय तक बीमार रहे थे। उनकी बीमारी का वो दौर 2 से 3 साल तक चला। इसके बाद, बाबा बालक नाथ के मंदिर में जल से उनका इलाज किया गया। शायद ये विधि का विधान ही था कि ये घटना हुई। इस घटना ने ही उनके मन में अध्यात्म के प्रति जिज्ञासा जगा दी थी।

वैसे, यह समझना जितना मुश्किल है, उतना ही मुश्किल यह समझाना है कि कैसे गुरुदेव जैसे शख्स, जिनका बचपन में बाबा बालक नाथ ने इलाज किया था, अपने दायरों को लांघकर इतने आगे निकल गए। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल वैसा ही है, जिस तरह पहले एक स्कूल के शिक्षक ही सारी उच्च शिक्षाएं देते थे, जबकि उनकी अपनी शिक्षा बड़ी सीमित होती थी। गौतम बुद्ध के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उनके शुरुआती वर्षों के शिक्षक कई साल बाद उनके शिष्य बन गए थे।

गुरुदेव से पहले आने वाले कई संतों की तरह गुरुदेव का आध्यात्मिक विकास भी अलग-अलग पड़ावों से होकर गुजरा। इस यात्रा ने उनकी आम ज़िंदगी को बेहद खास बना दिया।

भृगु संहिता में एक और गठबंधन का जिक्र किया गया है, जो गुरुदेव ने अश्विनी कुमारों के साथ किया था। अश्विन कुमार देवताओं के वैद्य माने जाते हैं। अश्विन कुमारों की जोड़ी ने भी खास तरह के उपचार करने में गुरुदेव की सहायता की थी।

गुरुदेव कई आकार और कई रूपों के साथ विद्यमान थे। वो एक ही वक्त पर शारीरिक और अलौकिक, दोनों स्वरूपों में रहते थे। उनकी चेतना का चक्र, उनके मानवीय अस्तित्व और उनके सूक्ष्म शरीर के बीच घूमता रहता था। इसमें उनका दिव्य रूप भी शामिल था।

शायद एक दिन ऐसा भी आए, जब गुरुदेव के चमत्कार के सामने, दुनिया के बाकी मशहूर अजूबे फीके पड़ जाएं।

महागुरु के बेड़े में पुंचू बहुत कम उम्र की सदस्य थीं। वो एक शिष्य की बेटी थीं और शादी के बाद एक शिष्य की ही बहू बनीं। और तो और, उनकी शादी भी एक शिष्य के साथ ही हुई थी। उनके अनुभव कुछ ऐसे हैं, जिन पर यकीन करना ज़रा मुश्किल है।

पुंचू जी : तो यह सपना कुछ इस तरह का था, मैं एक सुरंग से गुजर रही हूं और सुरंग के अगले छोर पर एक रोशनी दिख रही थी। गुरुजी जीन्स और टीशर्ट पहने हुए थे और अपनी उंगलियों में कार की चाबियां घुमा रहे थे। वो बहुत ऊंची जगह थी, पर वहां बादल नहीं थे। मैं नीचे देख सकती थी कि कुछ लाल रंग के पाइप्स एक दूसरे से होकर गुजर रहे हैं। हम किसी भी चीज पर नहीं खड़े थे। तब मैंने देखा कि 3 महिलाएं सामने से हमारी तरफ आ रही थीं। इनमें से एक ने लाल साड़ी पहनी हुई थी। वो गोरी थीं, लेकिन ज्यादा सुंदर नहीं थीं। उन्होंने अपने बालों में बीच की मांग निकाली हुई थी और सोने के गहने पहने हुए थे। उनके पीछे खड़ी दूसरी महिला ने अपने बालों में एक तरफ से मांग निकाली हुई थी और उनके लंबे रेशमी काले बाल थे। वो सुनहरे डिजाइन वाली एक काली साड़ी पहनी हुई थीं और बड़ी आकर्षक लग रही थीं। उनके पीछे एक और महिला थीं, जिन्होंने गोल्ड बॉर्डर वाली पीच कलर की साड़ी पहनी हुई थी। ये तीनों महिलाएं सामने आईं। मैंने उन्हें चलते हुए नहीं बल्कि हवा में तैरते हुए देखा। वो छोटे-छोटे कदमों से आगे की ओर सरक रही थीं।

उन तीनों नारियों ने गुरुजी को नमस्कार किया और कहा, "भगवन, आप यहां कैसे? आपने हमें बुला लिया होता।" गुरुजी मुस्कुराए और कहा, "मैं यहां पुंचू को अपने साथ लाया हूं। और फिर मैंने देखा कि एक गिलास, जैसे आप देखते हैं ना, एक स्टील का गिलास, लेकिन यह ज्यादा बड़ा और चौड़ा था और सोने का बना हुआ था। यह हवा में उड़ता हुआ आया और इसमें सफेद रंग का तरल भरा था। तो गुरुजी ने मुझे इसे पीने को कहा। इसे किसी ने भी पकड़ा नहीं था। यह बस हवा में था और मैंने इसे पी लिया। मुझे इसका स्वाद याद है। आप इसका स्वाद बता नहीं सकते, क्योंकि इसे बताने के लिए कोई शब्द ही नहीं है। मैं इसे मीठा भी नहीं कह सकती। मैंने इसे पूरा पी लिया। गुरुजी ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे और चाहिए। मैंने कहा, “हां।” तो फिर एक और गिलास हवा में उड़ता हुआ आया और मैंने उसे भी पी लिया। गुरुजी बस मुस्कुरा रहे थे। तो मैंने उनसे पूछा, "गुरुजी आप नहीं पी रहे हैं?" गुरुजी ने नीचे देखा, बहुत नीचे, ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए हैं और बहुत नीचे मैंने एक ट्रेन चलती हुई देखी। जी हां, एक चलती हुई ट्रेन! गुरुजी ने कहा कि वो वही खाएंगे, जो उस महिला ने उनके लिए बनाया है। तो उस ट्रेन में उस महिला के पास एक टिफिन था, जैसा एलुमिनियम का टिफिन होता है ना, और उसके अंदर दो ठंडे पराठे और सफेद चने थे। गुरुजी ने कहा, "बेटा उसने बड़े प्यार से मेरे लिए बनाए हैं, इसलिए मैं तो यही खाने वाला हूं।"

सवाल : तो आपको क्या लगता है कि आपके सपनों या ध्यान मुद्रा में, जो तीन नारियां आपको नजर आईं, वो कौन थीं?

पुंचू जी : मैं समझ गई थी। वो लक्ष्मी जी थीं। और पार्वती जी ने तो जैसे मेरी आंखें खोल दीं, क्योंकि मैंने उनके जैसा कभी कोई नहीं देखा था। लेकिन मुझे याद है कि जो साड़ी उन्होंने पहनी हुई थीं, वो कोई सांप जैसी चीज थी, जो उनसे लिपटी हुई थी। और तीसरी नारी सरस्वती जी थीं।

यह तो किसी पौराणिक फिल्म का सीन लगता है ...है ना?

दरअसल, मुश्किल यह है कि हम सच्चाई को सीमाओं में बांधकर देखते हैं। लेकिन मैं और मेरे गुरु भाई ऐसे कई अनुभवों से गुजर चुके हैं और फिर हमने ऐसी सीमाओं को मानना बंद कर दिया।

लिखने वाले ने भी क्या खूब लिखा है,
इबादत वो है जिसमें जरूरतों का जिक्र ना हो
इबादत वो है जिसमें जरूरतों का जिक्र ना हो
सिर्फ उसकी रहमतों का शुक्र हो, शुक्र हो, शुक्र हो

हमें बहुत-से अनुभव हुए जैसे राजी शर्मा ने गुरुदेव की मौजूदगी में अपनी ध्यान मुद्रा में शंकर जी का आशीर्वाद प्राप्त किया; स्वयं मैंने राम, लक्ष्मण और सीता का साक्षात अनुभव किया, डरायस ने ध्यान मुद्रा में ईसा मसीह को देखा और हमारे अनेक अनुभवों में हमें शिर्डी के साईं बाबा की मौजूदगी का एहसास हुआ। इन सभी अनुभवों ने हमारे लिए असंभव, अविश्वसनीय और अथाह जैसे शब्दों के मायने ही बदल दिए।

बद्रीनाथ, ज्वाला जी और कुछ मुस्लिम संतों के साथ गुरुदेव के गठबंधनों और उनके दर्शनों ने हमें सिर्फ देखना ही नहीं बल्कि उन्हें गहराई से समझना भी सिखाया।

जब आप अपने नजरिए की हदों को पार कर जाते हैं, तो आपके दिमाग का दायरा भी बढ़ जाता है।

ऐसे बहुत-से लोग हैं, जिन्हें स्थान पर लाने का श्रेय कई संत, बाबा मुक्तानंद, शिर्डी के साईं बाबा, गणपति और शायद अन्य देवी-देवताओं को जाता है।

सिद्ध गुरुओं को कभी गठबंधन की तासीर अपनाने की जरूरत नहीं पड़ती। ये बात तो उनकी सोच में ही शुमार होती है। एक दूसरे के आध्यात्मिक परिवारों की मदद करना, उन सभी का एक समान फर्ज़ होता है।

एफसी शर्मा जी को कभी किसी आलौकिक घटना पर आश्चर्य नहीं होता था। उन्हें दशकों तक इतने सारे रूहानी एहसास हुए कि वो इन बातों को सच के आईने में देखने लगे। आइए सुनते हैं ऐसी ही एक और कहानी और कोशिश करते हैं कि हमें इस पर ऐतबार हो जाए।

एफ सी शर्मा : मुझे याद है कि गुरुदेव मल्होत्रा जी से हर सुबह बताते थे कि रात को उन्हें क्या करना चाहिए। मल्होत्रा जी अगली सुबह गुरुदेव से अपने अनुभव बताते थे कि पिछली रात क्या

हुआ था। आगे चलकर हमें पता चला कि गुरुदेव ना सिर्फ उन्हें प्रशिक्षित कर रहे हैं बल्कि उन्हें किसी देवता के मंत्र भी दे रहे हैं और उन्हें उस देवता से मिलाने में मदद कर रहे हैं।

सवाल : गुरुदेव मल्होत्रा जी को देवताओं के मंत्र देते थे, ताकि मल्होत्रा जी उन देवताओं मिल सकें। कौन-से देवता थे?

एफ सी शर्मा : जैसे हनुमान जी। वो उन्हें हनुमान जी से मिलाते थे। वो मल्होत्रा जी को हनुमान जी के स्तर तक पहुंचाने की कोशिश करते थे।

हनुमान जी के साथ गुरुदेव के गठबंधन का मैं कभी साक्षी नहीं रहा, लेकिन एक-दो बार मुझ पर भी मंगल की मेहरबानी जरूर रही है।

माना जाता है कि हनुमान में मंगल ग्रह के गुण हैं और इसीलिए मंगलवार का दिन उनके लिए प्रमुख माना जाता है और इस दिन उनकी पूजा की जाती है।

मेरी ध्यान मुद्रा में एक अदृश्य शक्ति ने मुझे मंगल से जुड़ने का मंत्र दिया और इसका इस्तेमाल बताया। एक और मौके पर मुझे एक बड़े विचित्र पहाड़ के दर्शन हुए जहां मुझसे कहा गया कि वहां मंगल की ऊर्जा का वास है। मेरे आध्यात्मिक सहयोगी नितिन गाडेकर भी इस अलौकिक यात्रा में मेरे साथ थे। हम दोनों को इस शक्ति का आशीर्वाद मिला, जो हवा में तैरते एक उपहार के रूप में प्रकट हुआ। शायद यह एक अनुमान हो, लेकिन मुझे लगता है कि इस परम शक्ति के साथ गुरुदेव के गठबंधन की वजह से ही यह मुमकिन हुआ।

प्रदीप सेठी हमें अपने कुछ अनुभवों की झलक दिखा रहे हैं।

सवाल : तो प्रदीप जी मैं आपसे एक घटना के बारे में जानना चाहता हूं, जो आपने मुझे कई साल पहले बताई थी कि कैसे आपको शिर्डी के साईं बाबा के दर्शन हुए थे और कैसे उन्होंने आपकी मदद की थी।

प्रदीप सेठी : मैंने ज्वाला से शिफ्ट होने के बाद दीपज्योत में सेवा शुरू की थी। तो 6-7 महीने तक मैंने सेवा की। यह एक गुरुवार को 5 लोगों से शुरू हुई और फिर धीरे-धीरे इसमें सैकड़ों

लोग आने लगे। सात-आठ महीने बाद इस स्थान के आसपास रहने वाले लोगों को इस पर आपत्ति होने लगी थी, क्योंकि बहुत-से लोग आते थे और लंगर चलता था। तो एक दिन शाम को मैं सेवा कर रहा था। उन दिनों में मैं नीचे हॉल में बैठता था। मैं सेवा और संगत कर रहा था और कुछ लोग बाहर बैठे हुए थे। तो 15-20 लोग आए। वो आस-पास रहने वाले पढ़े-लिखे लोग थे, जो शिकायत कर रहे थे कि यहां बहुत शोर-शराबा हो रहा है और वे इसकी इजाजत नहीं देंगे। तो उन्होंने मुझे चेतावनी देते हुए कहा, "हम यहां ये नहीं होने देंगे।" मैं चुप था। मुझे बड़ी हैरानी भी हुई। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। अपनी सारी जिंदगी यदि मुझे कभी कोई मुश्किल होती है, तो मैं अपने गुरु की शरण लेता था। गुरुजी हमेशा मेरी बात सुनते थे। मैं उन्हें कॉल करता था, उनसे बात करता था और वो मेरा मार्गदर्शन करते थे और मैं भी उसका पालन करता था। मैंने फिर भी अपनी सेवा जारी रखी। एक घंटे बाद, जब मेरी सेवा खत्म हुई तो मैं अपने कमरे में गया और मैं अपने पलंग पर बैठा हुआ था। मैं काफी निराश था और यह सोच रहा था, "मैं अपने गुरु की सेवा कर रहा हूं, तो ये लोग आपत्ति क्यों उठा रहे हैं?" तभी अचानक मेरे सामने शिर्डी वाले साईं बाबा हरे रंग का साफा पहने बैठे नजर आए। वो अपने जवान रूप में थे। उनकी छोटी-सी काली दाढ़ी थी। उन्होंने मुझे देखा और कहा, "क्या तुम डर गए हो? मेरे वक्त में तो लोगों ने मुझ पर पत्थर फेंके थे।" फिर कुछ देर सन्नाटा छाया रहा। तब उन्होंने कहा, "जाओ अब तुम्हें कोई परेशान नहीं करेगा।" ये बात 30 साल पहले की थी।

सवाल : तो उन्होंने आपसे ये कहा क्योंकि लोग वहां आपके स्थान चलाने पर आपत्ति उठा रहे थे। क्या यह सही है?

प्रदीप सेठी : जी बिल्कुल सही है। वो लोग ऐसा ही चाहते थे। उन्होंने यही कहा था कि गुरुवार को बहुत शोर-शराबा होता है। असल में इतना शोर भी नहीं होता था।

सवाल : मुझे याद है कई साल पहले मेरे और आपके बीच एक चर्चा हुई थी, जब गुरुदेव अपना शरीर छोड़कर जा चुके थे। आप चौथे में शामिल हुए थे और आपने कहा था कि आपको एक बड़ा चमत्कारिक अनुभव हुआ था।

प्रदीप सेठी : जी हां।

सवाल : तो क्या आप उस बारे में बता सकते हैं?

प्रदीप सेठी : हां। हम सभी वहां बैठे थे और मुझे अब भी याद है कि वो दोपहर का वक्त था, 3:30 या 4 बजे होंगे। बहुत-से लोग वहां बैठे हुए थे और फिर कुछ सौ लोग भी थे जो तपस्वियों की तरह दिख रहे थे। वे सभी प्राचीन काल के साधुओं की तरह नजर आ रहे थे। और सबसे आगे शिर्डी के साईं बाबा बैठे हुए थे। मैं भी वहां बैठा था। गुरुदेव मेरी स्वप्न अवस्था में मुझे कई जगहों पर ले गए थे, लेकिन यह ऐसा दृश्य है जो मैंने बैठे हुए ही देखा था।

सवाल : क्या आपने खुली आंखों से इसे देखा?

प्रदीप सेठी : हां, मेरी आंखें खुली थीं। मैं सोच रहा था कि ये क्या है? पूरे समय मेरे मन में यही विचार आ रहा था। 6 महीने बाद एक रात गुरुदेव आए और उन्होंने मुझे यह सब बताया। वो हमेशा मेरे मन की आशंकाएं दूर करते हैं। उन्होंने कहा, "जब एक डॉक्टर मरता है, तो कौन आते हैं? यदि कोई व्यापारी मरता है तो कौन आते हैं? इसी तरह जब हम लोग मरते हैं, तब जिन लोगों के साथ हमारा आध्यात्मिक संबंध होता है, वो लोग आते हैं।" तो इस तरह उन्होंने यह स्पष्ट किया।

रावण को एक खलनायक के रूप में देखा जाता है। उन्हें एक ज्ञानी पंडित भी माना जाता है। वो ऐसे राजा थे, जिन्हें कोई हरा नहीं सकता था। वो शिव के परम भक्त, रामायण के प्रमुख पात्र थे और उनके व्यक्तित्व के कई रंग थे। मुझे लगता है कि मैं उन्हें चाचा जी कहकर बुलाऊं। यदि आप सोच रहे होंगे कि ऐसा क्यों, तो ज़रा आगे सुनिए

राजपाल सेखरी आगे बताते हैं,

राजपाल जी : दशहरा समारोह के बाद गुरुजी ने एक पवित्र जगह शुरू की थी, जब रावण के पुतले का दहन किया गया था। उन्होंने कहा कि आज रात वो पलंग पर नहीं सोना चाहते। मैंने उनसे पूछा वो पलंग पर क्यों नहीं सोएंगे। तो उन्होंने कहा बेटा आज मेरे भाई की मृत्यु हुई है, मैं जमीन पर सोऊंगा। मैंने उनसे पूछा कि उनका कौन-सा भाई था। उन्होंने कहा, “रावण।”

(सुंदर)

मैंने कहा, “वो आपका भाई कैसे हुआ?” उन्होंने कहा, “रावण भगवान शिव का शिष्य था और वे स्वयं शिव के शिष्य हैं, इस नाते से वो दोनों गुरु भाई हुए।”

एक बार गुरुदेव ने मुझे उत्तराखंड के श्रीनगर में अपने कैंप में बुलाया था। वहां से वो मुझे बद्रीनाथ ले गए, जहां उन्होंने मुझे कहा कि मैं मंदिर में जाऊं और देवता को गले लगाकर कहूं, "प्रिय भाई मैं तुम्हें झप्पी देने यानी प्यार से गले लगाने आया हूं।" मैं नहीं जानता कि उन्होंने इस पूजनीय देव को आखिर मेरा भाई क्यों बताया।

एक लंबी कहानी को मैं संक्षेप में बताता हूं। जब मैं मंदिर के अंदर गया तो मन ही मन कुछ बुदबुदाया। मैं इस सोच में पड़ गया कि आखिर मुझे क्या करना चाहिए। लेकिन, मेरे लिए यह आत्मीय समानता का एक सबक था। उस वक्त तो मुझे बड़ी हैरानी हुई लेकिन गुरुदेव की बात को समझने में मुझे एक दशक से ज्यादा का समय लग गया।

आज उसी समझ ने मुझे ये सिखाया है कि अंदर से कोई भी किसी से कमतर या महान नहीं होता। कभी-कभी तो मैं खुद पर ही आध्यात्मिक साम्यवादी होने का इल्ज़ाम लगाने में सबसे अव्वल होता हूं।

गुरुदेव लोगों से मंदिरों और प्रार्थना स्थलों में जाकर श्रद्धांजलि अर्पित करने को कहते थे। ऐसा लगता था, जैसे वो इन शक्तियों से हमें रूबरू कराना चाहते हों। आप इसे एक तरह की आध्यात्मिक नेटवर्किंग कह सकते हैं।

गग्गू बड़े इत्मिनान के साथ गुरुदेव की इस अनोखी आदत का जिक्र करते हैं।

गग्गू जी : हालांकि मैंने उनके साथ एक या दो बार ही सफर किया है। एक बार मैं उनके साथ श्रीनगर गया था। गुरुजी हमें हज़रतबल की मजार पर ले गए थे और शंकराचार्य के मंदिर में भी ले गए थे, लेकिन वो इन पवित्र जगहों के अंदर नहीं गए। वो हमसे अंदर जाकर आशीर्वाद लेने को कहते थे, लेकिन वो अंदर नहीं जाते थे। कार्तिक पूर्णिमा के दौरान गुरु नानक जयंती होती है और इस दिन वो लोगों से नहीं मिलते थे, बस अपना पाठ करते थे। यहां तक की कृष्ण जन्माष्टमी पर भी वे कुछ ही लोगों से मिलते थे और हमें प्रसाद बांटने को कह देते थे। सिर्फ वही जानते थे कि वो क्या ध्यान करते थे। वो चादर लेकर लेट जाते थे और 3-4 घंटे बाद उठते

थे या कभी-कभी आधे घंटे बाद ही उठ जाते थे। उनके अपने तौर-तरीके थे। सिर्फ उन्हें ही उनकी शक्ति और उनकी प्रणाली के बारे में पता था। हमें इस बारे में कुछ नहीं पता था।

औघड़ भी गुरुदेव के सबसे गहरे रहस्यों में से एक थे। लोगों ने उन्हें कुछ मौकों पर जरूर देखा, लेकिन शायद ही कभी उनसे आमना-सामना हुआ होगा। मेरी खुशकिस्मती थी कि मुझे वो तीन-चार बार बड़े करीब से नजर आए। मनुष्य के रूप में वो हरिद्वार के आसपास के इलाके में रहते थे, जो उनके आध्यात्मिक रुतबे वाला क्षेत्र था। वो कई साल पहले अपना शरीर छोड़ चुके थे।

औघड़ का अपना एक नटखट अंदाज़ था और वो तो जैसे गुरुदेव के कई शिष्यों के इम्तेहान का जरिया बन गए थे।

गग्गू आगे बताते हैं,

सवाल : क्या आप जानते हैं औघड़ कौन है? क्या आपने कभी उन्हें देखा है?

गग्गू जी : नहीं कभी नहीं। हालांकि गुरुजी कहते थे कि वो गुरुजी को इसकी-उसकी जानकारी देते थे।

सवाल : मतलब?

गग्गू जी : वो आते थे और गुरुजी को लोगों के बारे में बताते थे।

सवाल : तो गुरुदेव ने आपसे ये कहा कि औघड़ आकर उन्हें सबकुछ बताते हैं?

गग्गू जी : हां, जैसे हमारे बारे में कई अनजानी चीजें बता देते थे। हम सोचते थे गुरुजी को यह सब कैसे पता चला जबकि हम उन्हें नहीं बताते थे, लेकिन उन्हें पता चल जाता था कि किसी ने कुछ गलत किया या क्या किया।

औघड़ कई रूप बदल सकते थे। वो लोगों का दिमाग पढ़कर, उनकी परीक्षा ले सकते थे और गुरुदेव से उनकी चुगली भी कर सकते थे। औघड़ गुरुदेव को अपना सीनियर मानते थे। वैसे ये

भी सच है कि जरूरत पड़ने पर वो हमारे आध्यात्मिक परिवार की रक्षा भी करते थे। यदि आप उन्हें याद करके उनकी मदद मांगते थे, तो वो आने में ज्यादा देर नहीं लगाते थे।

गुरुदेव की बहनें हमसे एक ऐसा राज बता रही हैं, जो खुद उन्हें भी समझ नहीं आया। मुझे यकीन है कि ये कुछ ऐसा है, जो गरीब औघड़ ने भी नहीं सोचा होगा।

तो ये रहा वो राज़!

गुरुदेव की बहन : किसी ने मुझे बताया कि औघड़ जाकर गुरुजी को सबकुछ बता देता है। तो मैंने पप्पाजी (गुरुदेव) से पूछा, "यह कौन है? वो हमारा क्या लगता है?" उन्होंने बताया, "वो तुम्हारा भतीजा है।" तो मैंने बच्चों से कहा यदि वो मेरा भतीजा है तो मैं उसे सबक सिखाने के लिए अपनी छड़ी इस्तेमाल करूंगी, यदि उसने चुगली की तो।

मुझे लगता है कि औघड़ एक तरह से किसी कक्षा के परीक्षक की तरह थे। वो हमारा इम्तेहान लेने आते थे और हमारी उत्तर पुस्तिकाएं गुरुदेव को सौंपकर चले जाते थे। बहुत-से लोगों ने उन्हें पहचाने बिना ही उन्हें महसूस किया है।

औघड़ के साथ मेरे भी कुछ अनुभव रहे हैं, जो अनोखे भी हैं और प्रेरणादायक भी!

उनके साथ मेरा पिछला अनुभव देहरादून में हुआ था, जहां मैंने अस्थल पर स्थान के उद्घाटन के लिए उन्हें मानसिक रूप से आमंत्रित किया था। वो आए और दूर से मुझे देखा, लेकिन वो उस मंदिर में नहीं आए, जो हमने वहां स्थापित किया था। उन्होंने प्रसाद लिया, पूरे अधिकार से सभी सेवादारों से बात की और फिर गेट से बाहर चल दिए। जब कुछ शिष्य उन्हें देखने गए, तो तब तक वो अदृश्य हो चुके थे।

उनके पास अदृश्य होने और अलग-अलग भेष बदलने की शक्ति थी, और ये उनकी कई काबिलियतों में से एक थी।

एफसी शर्मा जी अपने नजरिए से औघड़ का वर्णन करते हैं, जिसे चाहे तो हम एक इंसान कहें, या देवता कहें या फिर शिष्य!

सवाल : औघड़ कौन थे और गुरुदेव के साथ उनका क्या रिश्ता था?

एफ सी शर्मा जी : आपने शिव पुराण पढ़ी होगी। उसमें औघड़ का उल्लेख किया गया है। यहां तक कि भगवान शिव को भी एक बार औघड़ बनना पड़ा था, जब उनकी शक्तियां चली गई थीं। उन शक्तियों को दोबारा हासिल करने के लिए उन्हें जाकर श्मशान में रहना पड़ा था। जितना मैं जानता हूं, औघड़ वो लोग होते हैं, जो श्मशान में रहते हैं, वहीं प्रार्थना करते हैं और जो भी मिलता है, वो खा लेते हैं। तो ये शिव के स्वरूप हैं और गुरुदेव कहते थे कि औघड़ है और वो उनका शिष्य है और उनके बाकी शिष्यों का भाई है। हमने कहा, "फिर आप हमें उससे मिलवाते क्यों नहीं?" उन्होंने जवाब दिया, "जब हम हरिद्वार जाएंगे, तो मैं तुम सबको उससे मिलवाऊंगा। जब गुरुदेव अपने शिष्यों के साथ हरिद्वार जाते थे, तो वो गायब हो जाते थे और जब उनसे पूछा जाता था कि वो कहां गए थे तो गुरुदेव कहते थे, "औघड़ आया था, तो मैं उससे मिलने गया था।" हमने कहा, "लेकिन हमने तो उसे नहीं देखा।" गुरुदेव ने जवाब दिया, "तुम क्या देखोगे? औघड़ साढ़े छह फुट लंबा है, उसकी आंखें लाल हैं और वो हमेशा श्मशान में रहता है।" जब यह सब शुरू हुआ तो औघड़ मेरे गुरु भाइयों और मुझ पर निगरानी रखता था और फिर गुरुजी को इसकी रिपोर्ट देता था। गुरुजी अक्सर कहते थे, "औघड़ आकर मुझे बताता है कि मेरे शिष्य क्या कर रहे थे।" सभी ये सोचकर घबरा जाते थे कि गुरुजी को सबकुछ पता चल जाता है। हमारे गुरु भाई सीताराम जी से गुरुजी ने पूछा, "तुम उधर बस में क्या कर रहे थे?" उन्होंने कहा, "कुछ नहीं गुरुजी।" गुरुजी बोले, "तुम सोचते हो मैं वहां नहीं जा सकता? मैं कहीं भी जा सकता हूं।" जब कोई शिकायत करता, तो गुरुजी कहते थे, "औघड़ मुझे सब बता देता है।" इस वजह से सारे शिष्य कुछ भी गलत करने से डरते थे कि औघड़ गुरुजी से इसकी चुगली कर देगा।

इन सभी अलग-अलग बातों के बीच मैंने यह गौर किया कि औघड़ असल में शिव का वो रूप है, जिसमें उनकी अर्धांगिनी नहीं है। शिव का यह एक मुखी अवतार गृहस्थ आश्रम वाले शिव के अवतार जैसा नहीं है, जैसा कि गुरुदेव का था।

अपने मानव रूप में औघड़ गुरुदेव को अपना सीनियर मानते थे। गुरुदेव जब भी हरिद्वार जाते थे, औघड़ उन्हें नमन करने आते थे। औघड़ कभी-कभी गुड़गांव भी आ जाते थे।

रवि त्रेहन जी इस बारे में अपनी राय बताते हैं,

सवाल : मगर औघड़ ने गुरुदेव को अपने शिक्षक के रूप में अपनाया था?

रवि जी : वो गुरुदेव को अपना गुरु भाई मानते थे, अपने सीनियर गुरु भाई की तरह!

सवाल : क्या औघड़ का कोई नाम भी था?

रवि जी : उनका नाम तो था, मुझे अभी याद नहीं आ रहा है। उनका नाम था और वो कई साल पहले हरिद्वार में अपने शारीरिक रूप में रहते थे।

सवाल : क्या वो अब भी जीवित हैं?

रवि जी : नहीं, मुझे लगता है कि उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया है।

सवाल : उन्होंने शरीर छोड़ दिया है?

रवि जी : हां, उन्होंने शरीर छोड़ दिया है।

औघड़ का ख़्याल ही बड़ा अनोखा, बड़ा विचित्र और दिलचस्प है। तस्वीरों में उनके चेहरे पर दाढ़ी, बाएं हाथ में त्रिशूल और आक्रामक मुद्रा नजर आती है। जबकि गृहस्थ शिव के दाएं हाथ में त्रिशूल होता है।जो विकसित और सिद्ध अघोरी होते हैं, वो शिव के इस रूप की पूजा करते हैं और उसके गुणों को पाने की ख्वाहिश रखते हैं, और अंत में वो इसी रूप का एक स्वरूप बन जाते हैं।

इस शख्स को लेकर कुछ लोगों की राय जानने और कुछ मौकों पर उनके नजर आने के बाद, हम उनका ज़िक्र एक ऊर्जा, एक ताकत के रूप में करने वाले हैं। गुरुदेव की पत्नी, बेटी, बहन और बाकी कई लोगों ने उन्हें देखने का दावा किया था।

आइए माताजी के साथ औघड़ को लेकर इस पड़ताल की शुरुआत करते हैं,

सवाल : क्या आपने औघड़ के बारे में सुना है?

माताजी : जब गुरुजी हरिद्वार जाते थे, तब वो लगभग हमेशा गुरुजी से मिलने आता था।

सवाल : क्या वो एक इंसान था, या क्या वो किसी शक्ति का नाम था?

माताजी : वो वहां इंसानी रूप में रहता था।

सवाल : उस शक्ति के साथ गुरुदेव का क्या संबंध था?

माताजी : अगर वो इनसे मिलने आता था, तो कुछ ना कुछ तो संबंध रहा होगा। मैंने उसे उसके शारीरिक रूप में, एक आदमी के रूप में देखा है। मैंने उसे हरिद्वार में ही देखा था। इनके पास सारे शिष्य आए और उन्होंने सबसे कहा कि जाओ और शाम को आरती के लिए आना। मैं उनके बाजू में जाकर खड़ी हो गई। उस वक्त मुझे पता चला कि औघड़ आया है और मैं भी उसे देखना चाहती थी। वो मुझसे बार-बार गंगा के करीब जाकर कहीं और से आरती देखने को कह रहे थे। तभी वहां एक आदमी खद्दर की पगड़ी और खद्दर का कुर्ता पजामा पहने आया, पूरी सफेद पोशाक में। वो आया और गुरुजी के सामने बैठ गया। जब वो झुका, तब मैंने उसे देखा। गुरुजी ने मुझसे कहा, "जब वो नीचे झुक रहा था तो उसने तुम्हारे पैर भी छुए थे।" लेकिन मुझे ऐसा कुछ महसूस नहीं हुआ। मैंने देखा कि वो आदमी हाथ जोड़कर प्रणाम कर रहा था और फिर वो खड़ा हुआ और चला गया। गुरुजी भी उसके पीछे-पीछे चले गए। मुझे पता ही नहीं चला कि वो आदमी और गुरुजी आखिर कहां गायब हो गए। इस बीच, सारे शिष्य भी वापस आ गए। शंभू वहां थे, पप्पू के पिता, संतोष, सुरेंदर, आदि सभी लोगों ने मुझसे पूछा कि गुरुजी कहां है। मैंने कहा कि अभी-अभी एक आदमी आया था और मुझे लगता है कि वो उसके साथ गए हैं। सभी ने यहां-वहां बहुत ढूंढा, लेकिन किसी को पता नहीं चला कि वो कहां गए थे। हमें कुछ नहीं पता था कि वो कहां गए थे।

फिर, लंबे समय बाद हम हरिद्वार गए थे। मल्होत्रा जी भी बाकी लोगों के साथ वहां थे। हम ऋषिकेश में लक्ष्मण झूला पर गए थे। जब हम झूले से गुजरे, तो वहां बड़ी गर्मी थी और हम बैठने की कोई जगह ढूंढ रहे थे। हमको कोई जगह नहीं मिली। इत्तेफाक से घाट पर हमने देखा

कि एक बहुत अच्छी जगह थी, जहां हम नहा भी सकते थे। वहां कुछ साधु भी लेटे हुए थे। उन्हीं के बीच सफेद चादर ओढ़े एक आदमी भी लेटा हुआ था। गुरुजी उसके पैरों के पास बैठ गए। जब मैं उनके साथ बैठने गई तो गुरुजी ने मुझे कहा कि जाकर नहा आओ और साथ में बाकी लेडीज़ को भी ले जाओ। हम वहां से चले गए। इस बीच सुरेंदर जी की पत्नी वहां आईं और गर्मी को लेकर शिकायत करने लगीं। तब उन्होंने गुरुजी से कहा कि क्या वो उनके बेटे को लेटा सकते हैं, क्योंकि वहां बहुत गर्मी हो रही थी। उन्होंने उस बच्चे को उस आदमी के सिर के पास लेटा दिया और सुरेंदर जी की पत्नी को भी वहां बैठा लिया और उनसे बातें करने लगे। उस आदमी ने अपनी चादर से झांका और धीरे-धीरे सुरेंदर जी की पत्नी की तरफ देखने लगा। उसकी बड़ी-बड़ी लाल आंखें थीं।

सवाल : वो आदमी जो सो रहा था?

माताजी : हां।

सवाल : यह किसने देखा था?

माताजी : शोभा ने देखा था। वो बहुत डर गई थी। गुरुजी ने उनसे जाने को कहा और बोला कि वो बच्चे का ख्याल रख लेंगे। तो वो चली गई। सारे शिष्य भी नहाने चले गए। तो गुरुजी ने उनसे कहा कि जाओ तुम भी नहा आओ। सिर्फ गुरुजी और वो बच्चा वहां थे। दूर से सभी यह देख सकते थे की वो बूढ़ा आदमी गुरुजी के पैरों के पास बैठा हुआ था। लेकिन जब तक सभी लोग लौटकर गुरुजी के पास आए, वो बूढ़ा आदमी गायब हो चुका था। इस बूढ़े आदमी ने गुरुदेव के चरण स्पर्श किए और गुरुदेव ने बदले में उस बच्चे को आशीर्वाद दिया। ये बात सभी ने देखी थी। सभी ने उसे बैठे हुए देखा था, लेकिन किसी ने भी उसका चेहरा नहीं देखा। इस बीच सुरेंदर भी पानी से बाहर आ गए। सभी ने गुरुजी से पूछा कि वो आदमी कौन था। गुरुजी ने बताया कि था कोई। तब किसी ने पूछा, “क्या वो औघड़ था?” उन्होंने कहा, “हां वो औघड़ था।” शिष्यों ने कहा कि वो औघड़ से मिलना चाहते थे, लेकिन गुरुजी ने कहा कि वो तो चला गया।

गुरुदेव की बेटी रेणु जी भी अपनी एक अघोरी कथा बताती हैं,

सवाल : क्या आप कभी औघड़ से मिली हैं?

रेणु जी : हां एक सुबह मिली थी। मैंने शोभा आंटी से औघड़ के बारे में सुना था कि वो कैसे औघड़ के जरिए अपना काम करवाती हैं। मेरी इस विषय में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन मुझे पता था कि जब गुरुदेव टूर पर होते थे तो औघड़, स्थान पर पहरा देता था। ये कही सुनी बातें थीं, लेकिन मैंने उसे कभी नहीं देखा था। बहुत लंबा था वो, स्टोर रूम की सीलिंग तक था। उसका चेहरा तो नहीं दिखा था। मैंने उसे देखा और सोचा कि ये क्या है। वो सफेद पोशाक पहना हुआ था। हां, और उसने लुंगी पहनी हुई थी और शायद ऊपर कुर्ता पहना था। मैं देख नहीं पाई कि वो इतना ऊंचा था।

सवाल : उसका चेहरा कैसा था?

रेणु जी : मैं उसका चेहरा बिल्कुल नहीं देख पाई।

सवाल : और उसकी त्वचा का रंग?

रेणु जी : मैं कुछ भी नहीं देख पाई। वो बहुत लंबा था।

सवाल : क्या आपने उसकी आंखें देखी थी?

रेणु जी : नहीं, मैं उसकी आंखें भी नहीं देख पाई। मैंने सिर्फ इतना देखा कि वो कितना लंबा था, 20 या 25 फीट का रहा होगा। जरा सोचिए, मैं तो अंदाजा भी नहीं लगा पाई कि वो कौन था। यह मेरे स्कूल के दिनों की बात थी। मैं उस समय आठवीं और नौवीं कक्षा में थी।

सवाल : वो वहां क्या कर रहा था?

रेणु जी : मैंने बस उसे खड़े देखा था। मेरी तो हालत खराब हो गई थी। फिर मैंने मां को बताया। हमारे पास टेलीफोन नहीं था। जब गुरुजी आए तो मैंने उनसे सारी बात बताई। गुरुजी ने कहा, वो औघड़ था। उन्होंने मुझसे कहा कि तू तो शेर की बेटी है और तुझे डरने की कोई जरूरत नहीं है। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या उसका रूप देखने के बाद मेरे साथ कुछ हुआ? मैंने कहा, “नहीं।” मम्मी ने भी बताया कि वो औघड़ होगा। मैंने कहा, “ठीक है।”

जिन लोगों ने भी औघड़ को देखा था, उनमें से ज्यादातर लोगों ने बस इत्तेफाक से उसे देखा था, क्योंकि जब तक वो नहीं चाहता था, वो ना तो किसी को दिखाई देता था और ना ही किसी से मिलता था। उसके मजाक करने का अंदाज भी बड़ा कातिलाना था! आप चाहें तो इस अंदाज़ को शरारत का चोला पहना सकते हैं।

वैसे, बग्गा जी ने औघड़ के इस अंदाज़ का स्वाद चखा था, जब औघड़ एक बूढ़ा गांव वाला बनकर हमीरपुर में चुपके से उनके इलेक्ट्रॉनिक स्टोर में आया था। वो शॉल ओढ़ा हुआ था और बिल्कुल किसी गंवार की तरह पेश आ रहा था।

वो बग्गा जी से बार-बार चीजों के दाम पूछ रहा था। जब एक महिला ग्राहक दुकान में आईं, तो हमारे ये बूढ़े दोस्त बार-बार बग्गा जी का ध्यान भटका रहे थे। फिर वही हुआ... बग्गा जी को गुस्सा आ गया और वो उस बूढ़े आदमी पर झल्ला गए और उसे जमकर खरी-खोटी सुना दी।

इसके बाद वो बूढ़ा आदमी वहां से चला गया। लेकिन जब बग्गा जी शिवरात्रि पर गुरुदेव से मिलने गुड़गांव पहुंचे, तो गुरुदेव ने उस मुलाकात को लेकर बग्गा जी पर तंज कसा। यह सब सुनकर कमरे में मौजूद हम सभी लोग आश्चर्य से भर गए।

बेचारे बग्गा जी... औघड़ ने उनकी परीक्षा ली थी और गुरुदेव ने उन्हें फेल कर दिया था।

वैसे, खुद मेरा भी ये दावा है कि मैंने औघड़ को दो बार देखा, और दो बार उससे चर्चा भी की। अब जबकि मैं आपको वो किस्से बताने जा रहा हूं तो ज़ाहिर है आप भी चाय की चुस्कियों के साथ इन मजेदार किस्सों का लुत्फ उठाना चाहेंगे! जी हां, मैंने चाय कहा!

गुरुदेव ने मुझसे कहा था कि यदि मुझे मदद की जरूरत हो तो मैं औघड़ को याद कर सकता हूं। गुरुदेव ने बताया था, "वो तुम्हारा भाई है और वो तुम्हारी बात का जवाब जरूर देगा।" औघड़ से मेरी पहली मुलाकात गुड़गांव में हुई थी। गुरुदेव के प्रिय राजी शर्मा आधी रात में गुरुदेव से मिलने पहुंचे थे। तब तक सारे सेवादार सो चुके थे और गुरुदेव ने मुझसे चाय बनाने को कह दिया। मुझे तो सिर्फ पानी उबालना आता था, लेकिन इसके बाद इसे चाय की शक्ल देना मेरे बस की बात नहीं थी। मैंने बस पानी उबालने रख दिया और फिर सोचा कि चलो औघड़ से

पूछता हूं। मैंने मन में उससे पूछा। इसके बाद जो हुआ, वो बड़ा दिलचस्प था। मुझे स्पष्ट तौर पर निर्देश मिले कि मैं पतीले का पानी आधा कर दूं। मैंने वैसा ही किया। फिर मुझे मानसिक संकेतों के जरिए ये बताया गया कि चाय का मसाला कहां रखा हुआ है। पूरी चाय बनने तक इस एक आवाज में मेरा मार्गदर्शन किया और जब मैंने चाय लाकर दी, तो गुरुदेव ने कहा कि यह बहुत बढ़िया चाय है। तो मैं तो सिर्फ एक जरिया था, असल में चाय तो औघड़ ने बनाई थी। गुरुदेव और राजी दोनों को ही यह बहुत पसंद आई। जब मैंने बची हुई चाय का स्वाद लिया, तो मैंने भी माना कि इससे बेहतर चाय तो मैंने पहले कभी पी ही नहीं थी। वैसे, मैं तो ये कहूंगा कि भविष्य में औघड़ भी चाय बनाने के इस हुनर को अपना पार्ट टाइम करियर बना सकते हैं।

एक और मौके पर मैंने देखा कि एक साधारण ग्रामीण के हुलिए में स्ट्रॉबेरी बेचनेवाला एक आदमी सड़क के उस पार, 100 फीट दूर से मुझे हाथ हिला रहा था। मैं अपनी कार में बैठा था। ऐसा तो बिल्कुल नहीं हो सकता था कि कोई 100 फीट दूर से विंडस्क्रीन के पीछे गाड़ी में बैठे किसी इंसान को पहचान सके। वो व्यक्ति सड़क पार करके मेरी कार के पास आया। हालांकि स्ट्रॉबेरी खाने की मेरी कतई इच्छा नहीं थी, लेकिन फिर भी मैंने एक बॉक्स खरीद लिया। उसने मुझसे 16 या 17 रुपए मांगे थे। मैंने उसे 20 रुपए दिए और उससे कहा कि वो छुट्टा अपने पास ही रखे।

उसने मुझसे बताया कि वो बहुत दिनों से मुझे ढूंढ रहा था, क्योंकि उसने मुझे अपने सपने में देखा था और अब मैं उसे मिल चुका हूं। ये सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे। मैं जानता था कि इस मुलाकात में कुछ तो गड़बड़ जरूर है।

उस व्यक्ति ने मुझे ढेर सारी धन-संपत्ति की दुआएं दीं। मैंने भी उसका शुक्रिया अदा किया, कुछ सेकंड बाद जब मैं उसे देखने के लिए मुड़ा, तो वो आदमी जा चुका था, वो अदृश्य हो गया था। उसके लिए तो ऐसा करना मुमकिन नहीं था, फिर ऐसा कैसे हो गया! यह मेरे लिए एक राज़ है। जब मैंने वो किस्सा याद किया तो गुरुदेव के चेहरे पर भी एक दबी हुई हंसी खिल गई थी।

एक बार गुरुदेव की पत्नी, माताजी को लुधियाना में अपने मायके जाना था। गुरुदेव ने सुभाष सभरवाल और मुझे उनके साथ जाने को कहा। लुधियाना पहुंचकर सुभाष और मैं रात के खाने के बाद टहलते हुए नुक्कड़ की एक दुकान पर पहुंच गए। हमारे पीछे नशे में धुत एक आदमी

साइकिल चलाते हुए आ रहा था। अपनी चीजें खरीदने के बाद सुभाष और मैं जैसे ही पीछे मुड़े तो हमने देखा कि वो आदमी हमारे रास्ते में खड़ा हुआ था। मैं इस मुलाकात को एक बुरा अनुभव समझकर भूल जाता, लेकिन वो आदमी तो हमें देखकर मुस्कुराए जा रहा था। फिर वो उसी मंत्र का जाप करने लगा, जो मैं अपने मन में बोल रहा था। मैं तुरंत भांप गया कि उसकी वो मदहोशी सिर्फ शराब की नहीं थी।

औघड़ सारी रात घर के चक्कर लगाता रहा और सुबह होने पर ही वहां से जाता था। एक तरह से औघड़ वहां का पेहरेदार था, जो माताजी की रक्षा में तैनात रहता था।

परिवार और दोस्ती का शारीरिक रिश्ता आध्यात्मिक स्तर तक पहुंचता है। जितनी भी विकसित आत्माएं हैं, वो अपनी पीढ़ियों और अतीत में उनके मार्गदर्शन का लाभ लेने वाले लोगों को राह दिखाते हैं। उच्चतम स्तर पर विकसित अलौकिक आत्माएं उन लोगों की सुनती हैं, जो उन्हें पूजते हैं और याद करते हैं।

गुरुदेव ने इस बात के स्पष्ट संकेत दिए थे कि उन्हें अपनी आध्यात्मिक जिम्मेदारियां निभाने के लिए दूसरी विकसित आत्माओं के साथ नाता जोड़ना होगा। उन्हें ऐसी अलौकिक सभाओं में शामिल होना होगा, जहां गठबंधन करके संयुक्त फैसले लिए जा सकें और इसी तरह से मसले हल किए जा सकें।

इन गठबंधनों का मकसद सिर्फ सामाजिक या भावनात्मक संबंध बनाना नहीं था, बल्कि पूरी जिम्मेदारी के साथ सच्चे तरीकों से सहयोग करना था।
तो चंद अशआर के साथ मैं चर्चा के इस कारवां को मंज़िल तक पहुंचाता हूं,

तमन्ना दर्द-ए-दिल की हो तो कर खिदमत फकीरों की,
तमन्ना दर्द-ए-दिल की हो तो कर खिदमत फकीरों की,
नहीं मिलता ये गौहर बादशाहों के खज़ीनों में,
गौहर का मतलब है मोती और खज़ीनों का मतलब है राजाओं का खज़ाना।
नहीं मिलता ये गौहर बादशाहों के खज़ीनों में